B.A.I, PAPER 2
SOCIOLOGY
M.A. JOHN

HINDU MARRIAGE

परिभाषा : अन्य सम्प्रदायों, धर्मों और समुदायों की समान हिन्दुओं के जीवन में भी विवाह को अति-आवश्यक माना गया है। हिन्दू शास्त्रकारों के अनुसार पत्नी के बिना पुरुष गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं कर सकता है। भारतीय हिन्दू समाज में धर्म, अर्थ और काम की पूर्ति का एक मात्र साधन विवाह ही माना जाता है। स्त्री पुरुष के इस सम्बन्ध को मृत्यु भी नहीं तोड़ सकती है। K.M. Kapadia ने हिन्दू विवाह को समझौता न मान कर एक धार्मिक संस्कार के रूप में स्वीकार किया है। हिन्दू विवाह का अर्थ केवल यौन सन्तुष्टि ही नहीं बल्कि धर्म का पालन भी है। यह सत्य है कि विवाह के द्वारा ही काम वासना की पूर्ति होती है जिससे सन्तान उत्पत्ति भी जुड़ी है लेकिन प्रत्येक हिन्दू का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति होता है। क्योंकि मोक्ष ही हिन्दू समाज में मानव का परम विकास माना गया है और विकास के इस स्तर तक पहुँचने के साधनों में विवाह का काफी महत्व है अर्थात बिना विवाह के मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

उद्देश्य : विभिन्न धर्म शास्त्रों द्वारा हिन्दू विवाह के उद्देश्यों की स्थापना की गई है। Rig veda के अनुसार विवाह का उद्देश्य गृहस्थी होकर देवों के लिये यज्ञ करना तथा सन्तान उत्पन्न करना है। स्मृतिकारों ने हिन्दू विवाह के उद्देश्यों को उनकी मान्यता के क्रम में इस प्रकार रखा है।

(1) धर्म (Dharma)

(2) प्रजा (Progeny)

(3) रति (Sexual Pleasure)

Scanned with CamScanner

(1) धर्म का पालन हिन्दू विवाह का मुख्य उद्देश्य है भारतीय समाज में प्रत्येक Hindu पुरुष के लिये कुछ धार्मिक कार्यों की व्यवस्था की गई है लेकिन इनका पालन पत्नी के बिना सम्भव नहीं

(2) इसका तात्पर्य संतानोत्पत्ति से है, जिसे Hindu विवाह का दूसर उद्देश्य माना जाता है। जब तक वह विवाह नहीं करता उस समाज तक सन्तान पैदा नहीं हो सकती।

(3) स्त्री-पुरुष की यौन इच्छाओं की पूर्ति करना विवाह का प्रमुख उद्देश्य है। फिर भी इसे हिन्दू विवाह के सामान्य उद्देश्य के रूप में स्वीकार किया गया है। इस से स्पष्ट होता है कि यौन संतुष्टि का हिन्दू विवाह में कम महत्व है। वास्तव में हिन्दू धर्मशास्त्रकारों ने यौन सन्तुष्टि को एक ओर आवश्यक माना है तो दूसरी ओर उस पर नियन्त्रण भी रखा।

धर्म शास्त्र में लिखित हिन्दू विवाह के उपरोक्त महत्वपूर्ण उद्देश्यों के अतिरिक्त विद्वानों द्वारा कुछ सामान्य उद्देश्यों का भी वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है।

(1) व्यक्तित्व का विकास

(2) परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यपालन

(3) नैतिक जीवन का विकास

Hindu विवाह के उपर्युक्त उद्देश्य समझौता मात्र नहीं है बल्कि एक प्रकार का धार्मिक संस्कार है

—x—

Scanned with CamScanner